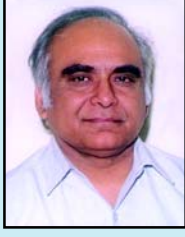


महानिदेशक की कलम से

विषय सूची

[Home](#) [Top](#) [Back](#)



## महानिदेशक की कलम से

मुझे वर्ष 2002-2003 के लिए भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की गतिविधियों, प्रगति एवं उपलब्धियों को प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है। यह वर्ष अत्यन्त सार्थक एवं चुनौतीपूर्ण रहा। परिषद के वैज्ञानिकों ने देश की मौजूदा स्वास्थ्य समस्याओं का हल ढूँढने के साथ-साथ सार्स जैसी नवीन चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया। पिछले वर्ष की भांति हमारे वैज्ञानिकों ने परम्परागत साधनों के साथ-साथ आधुनिक जैविकी के साधनों की सहायता से इन नई चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया है। यह आश्चर्यजनक नहीं कि इस वर्ष के दौरान परिषद के शोधकार्यों को नवीन प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर केन्द्रित रखा गया जिनका उद्देश्य भारतीय लोगों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाना है।

वर्ष 2003 के दौरान परिषद के दो संस्थानों-दिल्ली स्थित मलेरिया अनुसंधान केन्द्र और नई दिल्ली स्थित आयुर्विज्ञान सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान ने अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूरे किए। इन संस्थानों के लिए अपने-अपने महत्वपूर्ण योगदानों की जांच करने, शक्तियों एवं कमजोरियों की पहचान करने और नई एवं उभरती स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करने हेतु नवीन कार्य योजनाओं को तैयार करने, तथा राष्ट्रीय विकास के लिए स्वयं को पुनः समर्पित करने का यह एक सुअवसर है। मुझे इस बात की भी प्रसन्नता है कि इस वर्ष के दौरान अपने अग्रणी शोधकार्यों के आधार पर मुम्बई स्थित आंत्रविषाणु अनुसंधान केन्द्र की पहचान विश्व स्वास्थ्य संगठन के पोलियो हेतु विश्व स्तरीय विशिष्ट प्रयोगशाला के रूप में तथा राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान, बेथेसडा, संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा चेन्नई स्थित यक्ष्मा अनुसंधान केन्द्र की पहचान उत्कृष्ट अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र के रूप में की गई।

अनेक रोगों की नैदानिकी एवं वैक्सीनों के क्षेत्रों में प्रमुख उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं। पूरे विश्व में एच आई वी की घटना भयावह रूप से उच्च स्तरों पर पहुंच गई है और भारत इसका अपवाद नहीं है। हम न्यू यॉर्क स्थित इंटरनेशनल एड्स वैक्सीन इनीशिएटिव की सहायता में तथा थेरियाँ बायोलॉजिक्स, संयुक्त राज्य अमरीका के सहयोग में एक वेक्टर के रूप में रूमान्तरित अंकारा वैक्सीनिया का प्रयोग करते हुए एक एच आई वी/एड्स वैक्सीन को विकसित करने की दिशा में प्रयासरत हैं। यकृतशोथ ए, हैज़ा, जापानी मस्तिष्कशोथ, टाइफॉयड और लीशमैनियाता के लिए भी वैक्सीनें विकसित की जा रही हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण विकास के अन्तर्गत भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों ने प्रसव से पहले थैलासीमिया के निदान हेतु एक सिंगल सेल पी सी आर विधि स्थापित किया है। यकृतशोथ ए-IGM किट के उत्पादन, रोटाविषाणु और यकृतशोथ बी के लिए प्रतिजन पहचान किट तथा यकृतशोथ बी/सी के लिए पी सी आर आधारित परीक्षण जैसे कुछ नवीन प्रौद्योगिकियां विकसित की गई हैं और उद्योग को हस्तांतरित की जा रही हैं।

औषध विकास के क्षेत्र में, कालाज़ार के लिए एक मुखीय औषधि मिल्टेफोसिन के लिए तृतीय प्रावस्था के चिकित्सीय परीक्षण सफलतापूर्वक पूरे कर लिए गए हैं। नए तथा अनुक्रिया नहीं प्रदर्शित करने वाले रोगियों में 93 प्रतिशत से अधिक प्रभावकारिता देखी गई। पैनेसिया बायोटेक की भागीदारी में नीम पर आधारित प्रनीम नामक एक सूक्ष्मजीवनाशी को विकसित किया गया है जिसका द्वितीय प्रावस्था का चिकित्सीय परीक्षण किया जा रहा है। यकृत रोगों के लिए एक स्वदेशी उत्पाद पिक्रोनिव का वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद के सहयोग में चतुर्थ प्रावस्था का चिकित्सीय परीक्षण किया जा रहा है। आर्टीसुनेट और सल्फापाइरीडॉक्सामाइन का प्रयोग करते हुए मलेरिया रोधी संयुक्त उपचार के अत्यन्त आशाजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा कई नए रोगों से उत्पन्न प्रकोपों पर अध्ययन किए गए। इनमें से कुछ संक्रमण बहुऔषध प्रतिरोधी शिगला डिसेंटरी टाइप 1 उपभेद ; विब्रियो पैराहीमोलिटिकस 03:K जैसे G<sub>7</sub>B वयस्क रोटाविषाणुओं जैसे नवीन कारकों से उत्पन्न हुए थे। एक नवीन सीमियन रेट्रोवाइरस-SRV6 को भी पृथक किया गया। लंगूर में SRV की उपस्थिति का प्रथम विवरण है।

जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र में चुनौतियों का सामना करने के लिए जैवआयुर्विज्ञानी नीतिशास्त्र, बौद्धिक सम्पदा अधिकार, जैवसूचनाविज्ञान, आधुनिक जैविकी, औषधीय पादप और समाज विज्ञान के क्षेत्रों में कुछ नई इकाइयां स्थापित की गई हैं। मूल कोशिका में अनुसंधान के नियमन, आनुवंशिक रूप से रूमान्तरित खाद्यों के प्रयोग, जन्तुओं पर प्रयोग तथा भारत में बंध्यता क्लीनिकों में प्रयोग हेतु सहायक प्रजनन प्रौद्योगिकी के लिए दिशानिर्देश प्रकाशित किए गए हैं।

अन्य प्रमुख गतिविधियों में लखनऊ स्थित संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान के सहयोग में एम डी-पीएच. डी कार्यक्रम की शुरुआत सम्मिलित है। वित्तीय वर्ष 2002-2003 के दौरान कुल 627 शोध योजनाओं और 181 शोधवृत्तियों (फेलोशिप्स) को वित्तीय सहायता प्रदान की गई। इस अवधि के दौरान 1800 वैज्ञानिकों, अधिकारियों, तकनीकी स्टाफ के 2700 सदस्यों और सहयोगी स्टाफ के 800 सदस्यों को प्रशिक्षित किया गया। वर्ष 2002 के दौरान भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों द्वारा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जर्नलों में 330 वैज्ञानिक शोध पत्र प्रकाशित किए गए। इस वर्ष परिषद के प्रति शोध पत्र का इम्पैक्ट फैक्टर 2.092 था। कुल 20 पेटेंट के आवेदन फाइल किए गए जिनमें 2 पेटेंट संयुक्त राज्य अमरीका में फाइल किए गए।

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2002-03 में परिषद की आवश्यकता के विरुद्ध रूपए 116 करोड़ की राशि मंजूर की गई जिसमें रूपए 27 करोड़ की आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो सकी। वित्तीय धनराशि में इस कटौती के बावजूद अपर्याप्त संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग किया गया। आगामी वर्ष में परिषद देश की बेहतर सेवा करने के लिए ठोस प्रयास करेगी।

(निर्मल कुमार गांगुली)  
महानिदेशक

# विषय सूची

पूर्वावलोकन .....	1
संचारी रोग.....	6
प्रजनन स्वास्थ्य.....	72
पोषण .....	93
पर्यावरणी एवं व्यावसायिक स्वास्थ्य .....	102
असंचारी रोग .....	109
मौलिक आयुर्विज्ञान .....	122
सहायक सुविधाएं .....	134
प्रकाशन, सूचना एवं संचार .....	141

## परिशिष्ट :

I	भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के स्थाई संस्थान/केन्द्र .....	145
I	क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र .....	147
III	भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के उन्नत अनुसंधान केन्द्र .....	148
IV.	वर्ष 2002-2003 के दौरान परिषद के संस्थानों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम .....	149
V.	परिषद की वित्तीय सहायता से आयोजित संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/सम्मेलन .....	153
VI.	वर्ष 2002-2003 के दौरान वित्तीय सहायता प्रदान की गई शोध योजनाओं की सूची .....	159
VII.	वर्ष 2002-2003 के दौरान वित्तीय सहायता प्रदान की गई शोधवृत्तियों की सूची .....	230
VIII.	भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के संस्थानों द्वारा प्रकाशित शोध पत्रों की सूची .....	251